Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ श्री नरसिंह जयंती पूजा विधि ॥

संकल्प से पारण तक सरल पूजन-क्रम

व्रत, संध्या-पूजा, कथा, जागरण एवं समापन

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ श्री नरसिंह जयंती पूजा विधि ॥

॥ पर्व और पूजा का समय ॥

नरसिंह जयंती वैशाख शुक्ल चतुर्दशी को मनाई जाती है। भगवान का प्राकट्य संध्या से जुड़ा माना जाता है, इसलिए इस अवसर पर सूर्यास्त के निकट विशेष पूजन की परंपरा है। पूजा, संकल्प और पारण का समय अपने स्थान के पंचांग तथा अपने सम्प्रदाय के अनुसार तय करें। यह विधि घर पर श्रद्धापूर्वक पूजा करने के लिए सरल मार्गदर्शन है।

॥ पूजा की सामग्री ॥

लक्ष्मी-नरसिंह का चित्र या उपयुक्त विग्रह, चौकी, स्वच्छ वस्त्र, आसन, जल-पात्र, चम्मच, चंदन, अक्षत, पुष्प, तुलसीदल, धूप, दीपक, फल और सात्त्विक नैवेद्य रखें। अभिषेक योग्य विग्रह हो तो जल और परंपरा अनुसार पंचामृत रखें। आरती की थाली और पाठ की पुस्तक पास रखें। चित्र का पूजन पुष्प-चंदन से करें; उस पर अभिषेक न करें।

उपलब्ध सामग्री को स्वच्छता और श्रद्धा से अर्पित करें।

॥ श्री नरसिंह जयंती पूजा विधि ॥

॥ १. शुद्धि, व्रत और संकल्प ॥

स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहनें और पूजा-स्थान तैयार करें। अपनी क्षमता और परंपरा के अनुसार व्रत का संकल्प लें। इस दिन मन, वाणी और व्यवहार में संयम रखें। संकल्प के लिए हाथ में जल और पुष्प लेकर सरल भाव से कहें: “मैं श्री लक्ष्मी-नरसिंह की प्रसन्नता, भक्ति और सबके मंगल के लिए जयंती-पूजन करता/करती हूँ।” जल पात्र में छोड़ दें।

॥ २. मंगल-स्मरण और ध्यान ॥

श्रीगणेश, गुरु और अपने इष्ट का स्मरण करें। भगवान को प्रणाम करके ध्यान करें कि वे भक्त प्रह्लाद के रक्षक और करुणामय आश्रय हैं। लक्ष्मी जी सहित भगवान का स्मरण कर पुष्प अर्पित करें और पूजन स्वीकार करने की प्रार्थना करें। मन को एकाग्र करके यह नाम-मंत्र बोलें:

ॐ श्रीलक्ष्मीनृसिंहाय नमः।

॥ श्री नरसिंह जयंती पूजा विधि ॥

॥ ३. अभिषेक और उपचार-पूजन ॥

प्रतीक रूप से पाद्य, अर्घ्य और आचमन का जल अर्पित करें। अभिषेक योग्य विग्रह को जल से स्नान कराएँ; परंपरा हो तो पंचामृत के बाद शुद्ध जल चढ़ाएँ। स्वच्छ कपड़े से पोंछकर वस्त्र या उपवस्त्र, चंदन, अक्षत और पुष्प चढ़ाएँ। धूप और दीप अर्पित करें। प्रत्येक उपचार के समय भगवान का नाम श्रद्धापूर्वक लें।

॥ ४. मंत्र, स्तोत्र और कथा-पाठ ॥

उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम् ।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ॥

इस प्रचलित मंत्र का अपनी सुविधा अनुसार शांत जप करें। फिर कवच, अष्टकम या लक्ष्मी-नरसिंह करावलम्ब स्तोत्र में से परिचित पाठ करें। जयंती व्रत कथा सुनें या पढ़ें। पाठ करते समय स्पष्ट उच्चारण और अर्थ-चिंतन का भाव रखें।

॥ श्री नरसिंह जयंती पूजा विधि ॥

॥ ५. नैवेद्य, आरती और जागरण ॥

फल या अन्य सात्त्विक नैवेद्य जल और तुलसीदल सहित अर्पित करें। आरती करके पुष्पांजलि तथा प्रणाम करें। त्रुटियों के लिए क्षमा माँगें और निर्मल भक्ति की प्रार्थना करें। परंपरा अनुसार रात्रि में भजन, नाम-स्मरण और कथा के साथ जागरण करें। शांत वातावरण में परिवार के साथ भगवान की महिमा का स्मरण करें।

॥ ६. अगले दिन पूजन और पारण ॥

अगले दिन स्नान के बाद भगवान का पुनः पूजन करें। सामर्थ्य अनुसार दान और सेवा करें। आवाहित पूजा का समापन अपनी परंपरा अनुसार करें; स्थायी चित्र या विग्रह को उसके स्थान पर रखें। व्रत का पारण स्थानीय पंचांग में बताए समय और अपने सम्प्रदाय की रीति के अनुसार करें। प्रसाद एवं भोजन परिवार के साथ साझा करें।

॥ प्रह्लाद-पालक श्री लक्ष्मी-नरसिंह को प्रणाम ॥